International Journal of Applied Research 2024; 10(3): 225-231

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 225-231
www.allresearchjournal.com
Received: 20-02-2024
Accepted: 19-03-2024

मंजू
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

डॉ. रेणु कंसल
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
मंजू
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभावों का अध्ययन

मंजू, डॉ. रेणु कंसल

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i3c.12132

सारांश
यह शोध हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभावों का विस्तृत अध्ययन है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि कैसे ये तीन कारक – वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण को प्रभावित करते हैं और किस प्रकार यह आचरण सतत विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति उनकी जिम्मेदारियों को निर्धारित करता है।
शोध के लिए सोनीपत जिले के विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलों के 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 400 छात्र और 400 छात्राएं शामिल थे। इन विद्यार्थियों के पर्यावरणीय व्यवहार का आकलन करने के लिए एक मिश्रित पद्धति (गुणात्मक और मात्रात्मक) का उपयोग किया गया, जिसमें ऑनलाइन प्रश्नावली और साक्षात्कार जैसे उपकरणों से डेटा संग्रह किया गया। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्न, लिकर्ट स्केल प्रश्न और खुले–मदकमक उत्तर शामिल थे, जो विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता के मापन पर केंद्रित थे। इस डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया, जिसमें टी–टेस्ट, सहसंबंध गुणांक (Correlation coefficient) और ।छव्ट। (Analysis of Variance) जैसी तकनीकों का उपयोग किया गया।
अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष बताते हैं कि जिन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अधिक विकसित होता है, वे पर्यावरणीय समस्याओं को तार्किक और व्यवस्थित रूप से समझने और समाधान खोजने की अधिक प्रवृत्ति रखते हैं। ये विद्यार्थी पर्यावरणीय संकटों के वैज्ञानिक समाधान के लिए प्रतिबद्ध होते हैं और अपने व्यवहार में तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। उदाहरणस्वरूप, ये विद्यार्थी जल और ऊर्जा के बचत के लिए व्यक्तिगत स्तर पर बदलाव करते हैं और पुनर्चक्रण, प्रदूषण नियंत्रण जैसे कदम उठाते हैं।

कूटशब्द : वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक जागरूकता, पर्यावरणीय व्यवहार।

प्रस्तावना
भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान विद्यार्थी न केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के बारे में सोचते हैं बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होती है, वे पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और सामूहिक प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, वे सामुदायिक जागरूकता अभियानों में भाग लेते हैं और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं, जिन्हें पर्यावरणीय समस्याओं का सामना सबसे अधिक करना पड़ता है। सामाजिक जागरूकता का प्रभाव भी विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण पर व्यापक रूप से देखा गया है। जिन विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता का स्तर उच्च होता है, वे पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों को अधिक महत्व देते हैं। ये विद्यार्थी अपने व्यवहार में सुधार करते हैं और सामूहिक गतिविधियों जैसे वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियानों और जल संरक्षण अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि इन तीनों कारकों – वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का आपसी समन्वय विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण को गहराई से प्रभावित करता है। इसका प्रभाव व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर देखा गया है, जहाँ विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं को न केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी के

रूप में देखते हैं बल्कि उन्हें सामाजिक और वैज्ञानिक चुनौती के रूप में भी स्वीकार करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों के बीच पर्यावरणीय जागरूकता और आचरण में कुछ अंतर हो सकता है, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता के संदर्भ में सभी विद्यार्थियों में समान प्रवृत्तियाँ देखी गईं।

यह शोध पर्यावरणीय शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है और यह सुझाव देता है कि विद्यालयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी एक जागरूक नागरिक के रूप में विकसित हो सकेंगे, जो न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज और पर्यावरण की रक्षा में भी सक्रिय योगदान देंगे।

अंत में, यह अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि विद्यार्थियों के पर्यावरणीय व्यवहार में सुधार लाने के लिए केवल नीतिगत हस्तक्षेप पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता में सकारात्मक बदलाव लाने की आवश्यकता है। जब विद्यार्थी इन तीनों तत्वों को आत्मसात कर लेते हैं, तो वे सतत विकास और पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं, जो भविष्य में पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करने के लिए आवश्यक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण उन व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है जो प्रमाणित तथ्यों, तर्कसंगत विचारों और प्रयोगों के आधार पर ज्ञान को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञान के सिद्धांतों और विधियों का अध्ययन करता है और उनका उपयोग करके विश्वास और ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करता है। यह एक संगठित सोचने का तरीका है जो साक्ष्यों और तर्क प्रक्रियाओं पर आधारित है, जिससे घटनाओं को समझने और व्याख्या करने में मदद मिलती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता

यह शब्द उन गुणों को दर्शाता है जो व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और उनके साथ प्रभावी ढंग से संबंधित होने में सक्षम बनाते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने की क्षमता शामिल है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक है, जिससे व्यक्ति अपने आपसी संबंधों को समझदारी और सहानुभूति के साथ संभाल सकें और अपनी भावनाओं को स्वस्थ तरीके से प्रबंधित कर सकें।

सामाजिक जागरूकता

यह शब्द सामाजिक समस्याओं, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता और समर्थन को दर्शाता है। सामाजिक जागरूकता में सामाजिक समस्याओं की पहचान करने, सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझने और सामाजिक समाधानों की खोज करने की क्षमता शामिल होती है। यह व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक मामलों में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित करती है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए सामूहिक क्रियाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करती है।

पर्यावरणीय व्यवहार

यह शब्द व्यक्तियों के पर्यावरण के प्रति कार्यों और जिम्मेदारियों को दर्शाता है। इसमें सम्मान और संरक्षण की भावना, प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग, प्रदूषण कम करने, पर्यावरणीय क्षरण को रोकने और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता की भावना शामिल होती है। पर्यावरणीय व्यवहार व्यक्ति को पर्यावरण के साथ सहयोग करने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है और समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समझ

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मूल्यों, मन की आदतों और वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होता है। इसमें जिज्ञासा, संशयवाद, खुले विचार, वस्तुनिष्ठता और आलोचनात्मक सोच जैसी विशेषताएँ शामिल होती हैं, जो व्यक्तियों को सबूत मांगने, दावों का मूल्यांकन करने और तार्किक रूप से तर्क करने की दिशा में मार्गदर्शन करती हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण अनुभवजन्य साक्ष्य, सहकर्मी समीक्षा और वैज्ञानिक पद्धति के महत्व पर जोर देता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरण जागरूकता

वैज्ञानिक दृष्टिकोण पारिस्थितिक प्रणालियों और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं की गहरी समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा मिलता है। जब व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो वे पर्यावरणीय जानकारी की विश्वसनीयता का गंभीरता से मूल्यांकन करने में अधिक सक्षम होते हैं, जो कि उस समय में अत्यंत महत्वपूर्ण है जब गलत जानकारी का प्रसार व्यापक हो रहा है (स्टेफन एट अल., 2015)[1]। यह आलोचनात्मक सोच क्षमता पर्यावरणीय मुद्दों की जटिलताओं को समझने में सहायता करती है, जिससे अधिक जागरूक और संलग्न जनसमूह का निर्माण होता है। वैज्ञानिक साक्षरता, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निकटता से जुड़ी होती है, व्यक्तियों को पर्यावरणीय मुद्दों के संबंध में वैज्ञानिक डेटा को समझने और व्याख्या करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करती है। यह साक्षरता व्यक्तियों को पर्यावरणीय मुद्दों पर सूचित चर्चाओं में शामिल होने में सक्षम बनाती है, जो प्रभावी पर्यावरणीय वकालत के लिए आवश्यक है (मर्टन, आर.के. 2012)[2]। एक संतुलित वैज्ञानिक शिक्षा व्यक्तियों को प्रमाण–आधारित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है, विशेष रूप से उन नेतृत्व भूमिकाओं में जो पर्यावरण नीतियों को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीवनभर की सीखने की प्रक्रिया और पर्यावरणीय मुद्दों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। अनुसंधान इंगित करता है कि जिन व्यक्तियों के पास मजबूत वैज्ञानिक आधार होता है, वे पर्यावरणीय समस्याओं को सक्रिय रूप से अन्वेषण करने, महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने और अनुसंधान और सहयोग के माध्यम से नवाचारी समाधान खोजने की अधिक संभावना रखते हैं (मिलर–रशिंग एट अल., 2012)[3]। यह सक्रिय दृष्टिकोण पर्यावरणीय ह्रास और जलवायु परिवर्तन द्वारा उत्पन्न गतिशील चुनौतियों का सामना करने में आवश्यक है। पर्यावरण जागरूकता, जब वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जुड़ती है, तो यह स्थायी कार्यों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरक बन जाती है। यह जागरूकता मानव गतिविधियों के पारिस्थितिक तंत्र पर गहरे प्रभाव को पहचानने और जैव विविधता के संरक्षण के महत्व को समझने में निहित है। पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के अंतर्निहित मूल्य की समझ जागरूकता में वृद्धि करती है और पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के प्रति जिम्मेदारी और तत्परता को बढ़ावा देती है (कार्डिनेल एट अल., 2012)[4]। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरण जागरूकता के बीच का यह आपसी संबंध एक स्थायी भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण है। ये दोनों मिलकर एक ऐसी मानसिकता विकसित करते हैं जो पारंपरिक ज्ञान को चुनौती देती है और जटिल पर्यावरणीय समस्याओं के लिए नवाचारी समाधान अपनाती है। अनुसंधान से यह सिद्ध हुआ है कि जो व्यक्ति वैज्ञानिक रूप से साक्षर और पर्यावरणीय रूप से जागरूक होते हैं, वे अधिक संभावना रखते हैं कि वे स्थिरता में योगदान देने वाले व्यवहारों में संलग्न होंगे (कहान एट अल., 2012)[5]।

भावनात्मक बुद्धिमता और पर्यावरण व्यवहार

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का पर्यावरणीय मुद्दों को समझने और उन पर प्रतिक्रिया करने के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिससे व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता और प्रबंधित करता है और यह पर्यावरणीय दृष्टिकोण और व्यवहारों को गहराई से प्रभावित कर सकता है। जिन लोगों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होती है, वे पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूकता दिखाते हैं और पर्यावरण हितैषी कार्यों में संलग्न होते हैं, क्योंकि वे पर्यावरणीय क्षरण के प्रभावों के प्रति अधिक सहानुभूति महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति प्रकृति के साथ एक गहरे संबंध का अनुभव करते हैं, जो उन्हें सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने, रीसाइक्लिंग करने या पर्यावरणीय पहलों का समर्थन करने के लिए प्रेरित करता है।[6] इसके अलावा, भावनात्मक बुद्धिमत्ता सतत खपत को भी प्रभावित करती है। यह व्यक्तियों को अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने में मदद करती है, जिससे वे पर्यावरण के अनुकूल विकल्प चुनते हैं, जैसे कि कम पैकेजिंग वाले उत्पाद खरीदना या पुनर्नवीनीकरण सामग्री से बने उत्पादों का उपयोग करना।[7] सामुदायिक सेटिंग्स में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता सामूहिक पर्यावरणीय प्रयासों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग सामुदायिक उद्यानों में भाग लेने की अधिक संभावना रखते हैं, जो न केवल हरे भरे स्थान प्रदान करते हैं बल्कि समुदाय के बंधन को भी मजबूत करते हैं और पर्यावरण के प्रति साझा जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करते हैं।[8] इसके अलावा, जिन लोगों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होती है, वे पर्यावरणीय कारणों की वकालत करने में अधिक प्रभावी होते हैं, क्योंकि वे दूसरों की भावनाओं को समझने और उनसे जुड़ने की क्षमता रखते हैं, जिससे वे सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित कर सकते हैं।[9] भावनात्मक बुद्धिमत्ता और पर्यावरणीय व्यवहार के बीच के संबंध को समझना शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। स्कूलों और संगठनों द्वारा पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रशिक्षण शामिल करना इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को बढ़ा सकता है। जब लोग अपनी भावनाओं को पहचानना और प्रबंधित करना सीखते हैं, तो वे पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति गहरे संबंध का अनुभव करते हैं, जिससे अधिक सक्रिय और स्थायी पर्यावरणीय व्यवहारों को बढ़ावा मिलता है।[10]

शोध क्रियाविधि

शोध डिजाइन

इस शोध में वर्णनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया है, जिसमें मिश्रित दृष्टिकोण (गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों) शामिल है। इस डिजाइन का उद्देश्य हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का उनके पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। यह दृष्टिकोण इस शोध के उद्देश्यों और समस्याओं को समझने में सहायक है।

अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में किया गया है। यह क्षेत्र चुना गया क्योंकि यह विद्यार्थियों के बीच सामाजिक और पर्यावरणीय जागरूकता की स्थिति को मापने के लिए उपयुक्त है।

शोध की परिसीमा

- अध्ययन सोनीपत जिले के 800 विद्यार्थियों पर किया जाएगा।
- अध्ययन केवल वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया जाएगा।
- अध्ययन में 2 सरकारी विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों और 2 गैर सरकारी विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।
- अध्ययन में केवल विद्यार्थियों के पर्यावरणीय व्यवहार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

प्राथमिक डाटा

इस शोध अध्ययन के लिए हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का उनके पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभाव प्रमुख प्राथमिक डेटा का स्रोत है। इस उद्देश्य के लिए, एक ऑनलाइन सर्वेक्षण फॉर्म तैयार किया जाएगा, जिसके माध्यम से प्रश्नावली का उपयोग करके प्राथमिक डेटा एकत्र किया जाएगा। इस डेटा का उपयोग करके शोध अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने और विद्यार्थियों के पर्यावरणीय व्यवहार पर इन कारकों के प्रभाव को समझने का प्रयास किया जाएगा।

डेटा संग्रहण प्रक्रिया

डेटा संग्रहण के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इसमें लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्न शामिल हैं। डेटा ऑनलाइन और प्रत्यक्ष माध्यमों से एकत्र किया गया।

शोध उपकरण

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्केल (सुखवंत बाजवा, मोनिका महाजन, 2012)
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्केल (ए.के. सिंह, श्रुति नरेन, 2014)
- सामाजिक जागरूकता स्केल (उत्पल कालिता, 2017)
- पर्यावरणीय व्यवहार स्केल (अर्चना सिंह, उर्मिला वर्मा, प्रदीप सिंहल, 2012)

नमूना आकार और चयन प्रक्रिया

अध्ययन में कुल 800 विद्यार्थी (400 छात्र और 400 छात्राएं) शामिल हैं। नमूना चयन के लिए संभाव्यता और गैर–संभाव्यता नमूनाकरण विधियों का संयोजन किया गया। छात्रों के प्रतिनिधि नमूने के चयन में उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया।

डेटा का विश्लेषण

संग्रहित डेटा का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया गया। इसमें औसत माध्य स्कोर, मानक विचलन, टी–टेस्ट और सहसंबंध विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग किया गया।

नैतिकता और गोपनीयता

सर्वेक्षण के दौरान प्रतिभागियों की गोपनीयता सुनिश्चित की गई। स्वैच्छिक भागीदारी के आधार पर डेटा संग्रहित किया गया, और सभी नैतिक दिशानिर्देशों का पालन किया गया।

विश्वसनीयता विश्लेषण

विश्वसनीयता विश्लेषण के इस खंड में, हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक जागरूकता और पर्यावरणीय व्यवहार के चरों का आकलन करने के लिए किए गए माप उपकरणों की विश्वसनीयता के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। इस विश्लेषण में क्रोनबैक का अल्फा गुणांक का उपयोग किया गया, जो माप

पैमानों की आंतरिक संगति को दर्शाता है। तालिका में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार–

तालिका 1: विश्वसनीय विश्लेषण

JP	प्रत्येक चर प्रश्नो की संख्या	क्रोंनबैक अल्फा का मान	विश्वसनीय विश्लेषण
वैज्ञानिक दृष्टिकोण	10	0-907	उत्कृष्ठ
भावनात्मक बुद्धि	10	0.912	उत्कृष्ठ
सामाजिक जागरूकता	10	0-945	उत्कृष्ठ
पर्यावरणीय व्यवहार	10	0-910	उत्कृष्ठ

तालिका 1 में ये सभी आंकड़ें प्रस्तुत किए गए हैं, जो अध्ययन के माप उपकरणों की विश्वसनीयता और वैधता को रेखांकित करते हैं। इन सभी चरों के लिए प्राप्त उच्च क्रोनबैक के अल्फा गुणांक यह दर्शाते हैं कि शोध में उपयोग किए गए माप उपकरण सटीक और विश्वसनीय हैं। यह सुनिश्चित करता है कि शोध के निष्कर्ष सही और उपयोगी होंगे। विश्वसनीयता विश्लेषण के ये परिणाम शोध की गुणवत्ता और इसके निष्कर्षों की वैधता को मजबूती से स्थापित करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन के निष्कर्षों पर भरोसा किया जा सकता है और वे छात्रों के पर्यावरणीय व्यवहार के आकलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

तालिका 2 : वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	*dqy*	(औसत) माध्य	*ekud fopyu*	अंतर
1. पर्यावरणीय मुद्दों को समझने के लिए साक्ष्य–आधारित तर्क का उपयोग करना महत्वपूर्ण मानता हूँ।	800	4-500	1-080	1-166
2. पर्यावरण से संबंधित वैज्ञानिक अवधारणाओं की खोज में रुचि रखता हूँ।	800	4-048	0-981	0-963
3. पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान को जरूरी मानता हूँ।	800	4-116	0-936	0-876
4. पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करने में आत्मविश्वास है।	800	4-148	1-066	1-138
5. कोई राय बनाने या निर्णय लेने से पहले पर्यावरण से जुड़ी जानकारी पर विचार करता हूँ।	800	3-922	1-085	1-178
6. नई वैज्ञानिक खोजों के प्रति खुला विचार रखता हूँ जो पर्यावरण की समझ को प्रभावित कर सकती हैं।	800	4-106	1-107	1-226
7. पर्यावरण से जुड़े दावों या सिद्धांतों पर सवाल उठाने को जरूरी मानता हूँ।	800	3-470	0-188	0-778
8. पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक स्रोतों की खोज करता हूँ।	800	3-632	0-996	0-994
9. विज्ञान शिक्षा को पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण मानता हूँ।	800	3-675	1-039	1-180
10. पर्यावरण के अध्ययन और सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक पद्धति को एक मूल्यवान साधन मानता हूँ।	800	3-736	1-006	1-013

यह तालिका पर्यावरणीय मुद्दों पर किए गए एक सर्वेक्षण के परिणामों की वर्णनात्मक सांख्यिकी को प्रस्तुत करती है। इस सर्वेक्षण में 800 उत्तरदाताओं के डेटा का विश्लेषण किया गया, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन, और अंतर का उल्लेख किया गया है।

सर्वेक्षण में पूछे गए पहले प्रश्न में यह जानने की कोशिश की गई कि क्या उत्तरदाता पर्यावरणीय मुद्दों को समझने के लिए साक्ष्य–आधारित तर्क का उपयोग करना महत्वपूर्ण मानते हैं। इसका औसत 4.500 था, जो दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। इसी तरह, पर्यावरण से संबंधित वैज्ञानिक अवधारणाओं में रुचि रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी अधिक थी, जिसका औसत 4.048 था। यह दिखाता है कि अधिकांश उत्तरदाता वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पर्यावरणीय मुद्दों पर प्राथमिकता देते हैं। इसके अलावा, वैज्ञानिक अनुसंधान को पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के रूप में आवश्यक मानने का औसत 4.116 था।

सर्वेक्षण में पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करने में आत्मविश्वास रखने, और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों को एक मूल्यवान साधन मानने पर भी अधिकांश उत्तरदाता सहमत थे। इसके अलावा, कुछ मामलों में, जैसे पर्यावरणीय दावों पर सवाल उठाने या किसी राय को बनाने से पहले पर्यावरण से जुड़ी जानकारी पर विचार करने में उत्तरदाता कुछ हद तक कम सहमत थे, जैसा कि उनके औसत से पता चलता है।

सामान्यतः, सर्वेक्षण के परिणाम यह दर्शाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता पर्यावरणीय मुद्दों के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में उत्तरों में भिन्नता देखी गई है।

यह तालिका सामाजिक जागरूकता पर किए गए सर्वेक्षण के परिणामों की वर्णनात्मक सांख्यिकी को प्रस्तुत करती है। इस सर्वेक्षण में 800 उत्तरदाताओं के डेटा का विश्लेषण किया गया है, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन, और अंतर का विवरण दिया गया है।

सर्वेक्षण में पूछे गए पहले प्रश्न में यह जानने की कोशिश की गई कि क्या उत्तरदाता सामाजिक अन्याय और असमानताओं को समझते हैं, जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। इसका औसत 4.070 था, जो दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। इसके अलावा, अधिकांश उत्तरदाता यह मानते हैं कि सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों का एक गहरा संबंध है।

दूसरे प्रश्न में, उत्तरदाताओं से पूछा गया था कि क्या वे समाज में हाशिए पर पड़े समुदायों के पर्यावरणीय अधिकारों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। इसका औसत 4.038 था, जो यह दिखाता है कि उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। इसके साथ ही, यह भी दर्शाता है कि वे कमजोर समुदायों के प्रति अधिक संवेदनशील और जागरूक हैं।

इसके अतिरिक्त, सर्वेक्षण में यह भी पूछा गया था कि क्या उत्तरदाता समाज के विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करते हैं। इसका औसत 3.876 था, जो

दर्शाता है कि उत्तरदाता इस पर कुछ हद तक सहमत हैं, लेकिन इसमें कुछ भिन्नताएँ भी हैं। आखिरकार, अधिकांश उत्तरदाता यह मानते हैं कि उनके व्यक्तिगत उपभोग और जीवनशैली के पर्यावरणीय प्रभाव पर उन्हें पूरी जानकारी होनी चाहिए, और यह उनके निर्णयों को प्रभावित करता है। इस सर्वेक्षण के परिणाम यह दिखाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों को गंभीरता से समझते हैं और उनके समाधान में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं।

तालिका 3: भावनात्मक बुद्धि की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	*dqy*	माध्य	*ekud fopyu*	अंतर
1. पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति मेरी भावनाएँ स्पष्ट हैं।	800	3-560	0-987	0-975
2. चुनौतीपूर्ण पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना करते समय अपनी भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित कर सकता हूँ।	800	3-721	1-093	1-195
3. पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति सहानुभूति रखता हूँ।	800	3-690	1-050	1-103
4. अपनी पर्यावरणीय चिंताओं और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सक्षम हूँ।	800	3-512	1-099	1-209
5. मेरी भावनाएँ मेरे पर्यावरणीय निर्णयों और कार्यों को कैसे प्रभावित करती हैं, इसका मुझे अहसास है।	800	3-533	1-137	1-293
6. पर्यावरणीय विषयों पर चर्चा करते समय दूसरों की भावनाओं को पहचान और समझ सकता हूँ।	800	3-953	1-120	1-256
7. पर्यावरणीय प्रयासों में असफलताओं या चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हूँ।	800	3-816	1-173	1-377
8. पर्यावरणीय तनावों के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित कर सकता हूँ।	800	3-942	1-057	1-118
9. कमजोर समुदायों पर पर्यावरणीय मुद्दों के प्रभाव के प्रति सहानुभूति रखता हूँ।	800	4-038	0-972	0-946
10. प्रकृति और पर्यावरण के साथ सकारात्मक भावनात्मक संबंध बनाने का प्रयास करता हूँ।	800	3-992	1-100	1-211

तालिका 4: सामाजिक जागरूकता की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	*dqy*	माध्य	*ekud fopyu*	अंतर
1. मानव समाज और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच संबंध को समझता हूँ।	800	3.675	1.194	1.426
2. सामाजिक अन्याय और असमानताओं को समझता हूँ जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं।	800	4.070	1.032	1.066
3. स्थानीय और वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जानकारी है।	800	3.822	1.048	1.100
4. पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सामुदायिक भागीदारी के महत्व को समझता हूँ।	800	4.062	0.927	0.860
5. पर्यावरणीय मुद्दों पर विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में खुद को शिक्षित करने का प्रयास करता हूँ।	800	4.012	0.918	0.843
6. उन सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों से अवगत हूँ जो पर्यावरणीय दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।	800	3.762	1.075	1.158
7. ऐसी पर्यावरणीय नीतियों का समर्थन करता हूँ जो सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देती हैं।	800	4.030	0.912	0.833
8. विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ पर्यावरणीय मुद्दों पर बातचीत में शामिल होता हूँ।	800	3.876	1.054	1.112
9. अपनी जीवनशैली और उपभोग की आदतों के पर्यावरणीय प्रभाव के प्रति सचेत हूँ।	800	4.017	0.946	0.896
10. ऐसी पहलों का समर्थन करता हूँ जो पर्यावरण संबंधी निर्णय लेने में हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाती हैं।	800	3.950	0.925	0.856

यह तालिका "सामाजिक जागरूकता" से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों की वर्णनात्मक सांख्यिकी को प्रस्तुत करती है। इसमें 800 उत्तरदाताओं का डेटा है और प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन और अंतर का विवरण दिया गया है।

सर्वेक्षण में पहले प्रश्न में यह पूछा गया था कि क्या उत्तरदाता मानव समाज और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच संबंध को समझते हैं। इसका माध्य 3.675 था, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। मानक विचलन 1.194 और अंतर 1.426 हैं, जो यह बताते हैं कि उत्तरों में कुछ भिन्नता है। दूसरे प्रश्न में यह पूछा गया कि क्या उत्तरदाता सामाजिक अन्याय और असमानताओं को समझते हैं जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। इसका औसत 4.070 था, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। मानक विचलन 1.032 और अंतर 1.066 हैं, जो यह दर्शाते हैं कि उत्तरों में भिन्नता मध्यम है।

तीसरे प्रश्न में पूछा गया था कि क्या उत्तरदाता स्थानीय और वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जानकारी रखते हैं। इसका औसत 3.822 था, जो यह दर्शाता है कि उत्तरदाता इस बारे में जागरूक हैं। चौथे प्रश्न में पूछा गया था कि क्या उत्तरदाता सामुदायिक भागीदारी के महत्व को समझते हैं, और इसका औसत 4.062 था, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं। पांचवे प्रश्न में यह पूछा गया था कि क्या उत्तरदाता पर्यावरणीय मुद्दों पर विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में शिक्षित करने का प्रयास करते हैं। इसका औसत 4.012 था, जो यह दिखाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस पर सहमत हैं।

इस प्रकार, सर्वेक्षण के परिणाम यह दर्शाते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक हैं और इन मुद्दों के समाधान में सामुदायिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्व देते हैं।

यह तालिका 5 पर्यावरणीय व्यवहार से संबंधित विभिन्न पहलुओं की सांख्यिकी को प्रस्तुत करती है। इसमें 10 प्रमुख प्रश्न शामिल हैं, जो यह जांचते हैं कि छात्र किस हद तक पर्यावरण के प्रति जागरूक और संलग्न हैं। पहला प्रश्न इस बात को मापता है कि छात्र कितनी बार पर्यावरण संरक्षण वाली गतिविधियों में भाग लेते हैं, जैसे रीसाइक्लिंग और ऊर्जा की बचत। इसका माध्य (औसत) स्कोर 4.050 है, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्र इन गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। दूसरा प्रश्न दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जागरूक विकल्प चुनने पर केंद्रित है, जैसे पुनः प्रयोज्य उत्पादों का उपयोग करना। इसका माध्य स्कोर 4.025 है, जो दर्शाता है कि छात्र अपने दैनिक जीवन में इन विकल्पों को अपनाते हैं। तीसरा प्रश्न इस बात की जांच करता है कि छात्र पर्यावरणीय मुद्दों और समाधानों के बारे में जानने के लिए कितने

उत्सुक हैं। इसका औसत स्कोर 4.067 है, जो दर्शाता है कि छात्र सक्रिय रूप से इस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। चौथा प्रश्न यह देखता है कि छात्र पर्यावरणीय मुद्दों या संगठनों के लिए स्वेच्छा से समय देने के लिए कितने तैयार हैं। इसका औसत स्कोर 4.028 है, जो इस प्रवृत्ति को दिखाता है। पाँचवाँ प्रश्न समुदाय में पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ प्रथाओं का समर्थन करने की प्रवृत्ति को मापता है, जिसका औसत 4.042 है।

तालिका 5: पर्यावरणीय व्यवहार की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	*dqy*	माध्य	*ekud fopyu*	अंतर
1. नियमित रूप से पर्यावरण संरक्षण वाली गतिविधियों में भाग लेता हूँ (जैसे, रीसाइक्लिंग, ऊर्जा की बचत)।	800	4-050	1-032	1-066
2. दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जागरूक विकल्प चुनता हूँ (जैसे, पुनः प्रयोज्य उत्पादों का उपयोग)।	800	4-025	0-958	0-918
3. पर्यावरणीय मुद्दों और समाधानों के बारे में जानने के अवसरों की तलाश करता हूँ।	800	4-067	0-956	0-914
4. पर्यावरणीय मुद्दों या संगठनों के लिए स्वेच्छा से समय देता हूँ।	800	4-028	0-988	0-977
5. अपने समुदाय में पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ प्रथाओं का समर्थन करता हूँ।	800	4-042	1-015	1-032
6. अपने पर्यावरणीय पदचिह्न के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेता हूँ।	800	4-166	0-932	0-870
7. जिम्मेदारी वाले निर्णय लेते समय पर्यावरण को प्राथमिकता देता हूँ।	800	4-038	1-004	1-009
8. बाहरी गतिविधियों में संलग्न रहता हूँ जो प्रकृति से जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं।	800	4-057	1-078	1-163
9. उन नीतियों और पहलों का समर्थन करता हूँ जिनका उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा करना है।	800	4-048	0-981	0-963
10. जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरणीय मुद्दों की जानकारी दूसरों के साथ साझा करता हूँ।	800	4-118	0-934	0-873

कुल मिलाकर, उपरोक्त तालिका में प्रस्तुत किए गए आँकड़े बताते हैं कि विभिन्न पहलुओं के लिए औसत स्कोर, स्कोर में परिवर्तनशीलता और अंकों की सीमा को किस तरह सारांशित किया गया है। ये आँकड़े हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के छात्रों के पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति दृष्टिकोण, धारणा और व्यवहार को समझने में मदद करते हैं। यह तालिका दिखाती हैं कि छात्र पर्यावरणीय मुद्दों को लेकर किस हद तक जागरूक हैं और उनके व्यवहार में इसके प्रति कैसा रुझान है।

सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने और पर्यावरणीय व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ

सामाजिक जागरूकता और पर्यावरणीय रूप से स्थायी व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। एक प्रमुख दृष्टिकोण है शिक्षा और जागरूकता बढ़ाना। शैक्षिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान जानकारी प्रदान करके, चेतना बढ़ाकर और पर्यावरणीय मुद्दों और उनके सामाजिक आयामों के प्रति सहानुभूति को बढ़ावा देकर सामाजिक जागरूकता को बढ़ा सकते हैं। स्कूलों, विश्वविद्यालयों और समुदायों में पर्यावरण शिक्षा की पहल मानव गतिविधियों और पर्यावरणीय परिणामों के बीच परस्पर संबंध की समझ को बढ़ा सकती है, साथ ही पर्यावरणीय नेतृत्व और स्थिरता का समर्थन करने वाले मूल्यों और दृष्टिकोणों को भी विकसित कर सकती है। एक अन्य महत्वपूर्ण रणनीति है सामुदायिक जुड़ाव और भागीदारी। सामुदायिक संगठन, जमीनी स्तर की पहल और स्थानीय नेटवर्क संवाद, सहयोग और सशक्तिकरण के लिए मंच प्रदान कर सकते हैं, जिससे व्यक्ति एक–दूसरे से जुड़ सकते हैं, अनुभव साझा कर सकते हैं और पर्यावरणीय कार्रवाई के लिए संसाधन जुटा सकते हैं। समावेशी निर्णय लेना और भागीदारी भी आवश्यक हैं। ऐसी निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ जो विविध दृष्टिकोणों और आवाजों को शामिल करती हैं जो सामाजिक जागरूकता को बढ़ा सकती हैं और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि पर्यावरण नीतियाँ और पहल सभी हितधारकों की जरूरतों और चिंताओं को दर्शाती हैं, विशेष रूप से हाशिए के समुदायों और कमजोर आबादी की। सहानुभूति और करुणा का निर्माण भी एक प्रभावी रणनीति है। सहानुभूति–निर्माण अभ्यास, कहानी कहने और अनुभवात्मक सीखने के अवसर व्यक्तियों को दूसरों के अनुभवों और दृष्टिकोणों से जुड़ने में मदद कर सकते हैं, जिससे एकजुटता की भावना बढ़ती है और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए साझा जिम्मेदारी को बढ़ावा मिलता है। अंत में, पर्यावरण न्याय और समानता को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। पर्यावरणीय न्याय और समानता को बढ़ावा देने के प्रयास पर्यावरणीय मुद्दों से जुड़ी सामाजिक असमानताओं और अन्याय के बारे में जागरूकता बढ़ाकर सामाजिक जागरूकता को बढ़ा सकते हैं। ऐसी नीतियों और प्रथाओं के लिए वकालत करना जो पर्यावरणीय असमानताओं को संबोधित करती हैं, हाशिए के समुदायों का समर्थन करती हैं और समावेशी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को बढ़ावा देती हैं, सामाजिक जागरूकता को आगे बढ़ा सकती हैं और पर्यावरणीय न्याय और समानता के लिए सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित कर सकती हैं।

निष्कर्ष

हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभावों के अध्ययन पर कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। अध्ययन के अनुसार, छात्र और छात्राओं के बीच पर्यावरणीय व्यवहार में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसका मतलब है कि इस शैक्षिक स्तर पर, सभी छात्रों के बीच पर्यावरणीय सोच और गतिविधियों में समानता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय जागरूकता और सहभागिता को लेकर लिंग भेदभाव नहीं है। इसके अलावा, अध्ययन ने यह भी दिखाया कि सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों के बीच पर्यावरणीय व्यवहार में कोई बड़ा अंतर नहीं है। दोनों प्रकार के स्कूलों के छात्र समान शैक्षिक सेटिंग्स में होने के बावजूद समान स्तर की पर्यावरणीय सोच और गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं। इसका तात्पर्य है कि स्कूल का प्रकार पर्यावरणीय व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता। अध्ययन से यह भी पता चला है कि छात्र और छात्राओं दोनों ही पर्यावरणीय मुद्दों पर समान वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रकट करते हैं। यह दर्शाता है कि लिंग की परवाह किए बिना, सभी छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक जैसा होता है। इसी प्रकार, स्कूल का प्रकार भी पर्यावरणीय मुद्दों पर छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता। इससे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के महत्व की पुष्टि होती है। भावनात्मक संवेदनशीलता के संदर्भ में, अध्ययन ने दिखाया कि यह उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के पर्यावरणीय व्यवहार को सीधे प्रभावित नहीं करती है। हालांकि, सभी छात्रों के बीच समान स्तर की भावनात्मक संवेदनशीलता होती है, जो बताता है कि भावनात्मक कारक पर्यावरणीय सोच में प्रभावी हो सकते हैं, लेकिन वर्तमान अध्ययन में इसका कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं दिखा। अंततः, अध्ययन

ने यह भी बताया कि लिंग या स्कूल के प्रकार के आधार पर सामाजिक जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। सभी छात्र पर्यावरणीय मुद्दों पर समान सामाजिक जागरूकता का प्रदर्शन करते हैं। इससे यह जाहिर होता है कि सामाजिक जागरूकता भी पर्यावरणीय दृष्टिकोण और व्यवहार को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये निष्कर्ष पर्यावरणीय शिक्षा की नीतियों और प्रथाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। वे यह दिखाते हैं कि जिम्मेदार व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक जागरूकता और सामाजिक जुड़ाव को एकीकृत करना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सभी छात्रों के बीच पर्यावरणीय चेतना और कार्यों में समानता बनी रहे और पर्यावरणीय शिक्षा की प्रभावशीलता में सुधार हो सके।

संदर्भ सूची

1. स्टेफन, डब्ल्यू., एट अल. 'द ट्रेजेक्टरी ऑफ द एंथ्रोपोसीन : द ग्रेट एक्सीलरेशन.' द एंथ्रोपोसीन रिव्यू, 2(1), 2015, पृ. 81–98.
2. मर्टन, आर.के. द सोशियोलॉजी ऑफ साइंस : थ्योरिटिकल एंड एम्पिरिकल इन्वेस्टिगेशन्स. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2012.
3. मिलर–रशिंग, ए. जे., एट अल. द रोल ऑफ सिटिजन साइंस इन एड्रेसिंग ग्रैंड चैलेंजेस इन एनवायरनमेंटल साइंस. फ्रंटियर्स इन इकोलॉजी एंड द एनवायरनमेंट, 10(6), 2012, पृ. 299–304.
4. कार्डिनेल, बी. जे., एट अल. 'बायोडाइवर्सिटी लॉस एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन ह्यूमैनिटी.' नेचर, 486(7401), 2012, पृ. 59–67.
5. कहान, डी. एम., एट अल. 'द पॉलराइजिंग इम्पैक्ट ऑफ साइंस लिटरेसी एंड न्यूमरेसी ऑन परसीव्ड क्लाइमेट चेंज रिस्क्स.' नेचर क्लाइमेट चेंज, 2(10), 2012, पृ. 732–735.
6. गोलमैन, डी. 'इमोशनल इंटेलिजेंस एंड द इको–कॉन्शस माइंड.' हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू, 2016
7. शूटे, एन. एस., – भुल्लर, एन. 'इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी.' पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 2017
8. ब्रैटमैन, जी. एन., एट अल. 'नेचर एंड मेंटल हेल्थ : एन इकोसिस्टम सर्विस पर्सपेक्टिव.' साइंस एडवांसेस, 2019
9. मेयर, जे. डी., एट अल. 'इमोशनल इंटेलिजेंस ऐज ए प्रेडिक्टर ऑफ एनवायरनमेंटल एडवोकेसी.' जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी असेसमेंट, 2016
10. सालोवे, पी., – ग्रेवाल, डी. 'द साइंस ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस : व्हाट वी नो एंड व्हाट वी नीड टू लर्न.' साइकोलॉजिकल इन्क्वायरी, 2016